मसीही परिवार में बच्चों का पालन पोषण

फ्रैंकलीन द्वारा तैयार नोट्स

भजन संहिता 127:3 : "बच्चे यहोवा के दिए हुए दान हैं, वे उसकी ओर से प्रतिफल हैं।"

❖ यीशु बच्चों से प्रेम करते हैं, तथा वे कड़ी चेतावनी देते हुए कहते हैं :
"बच्चों को मेरे पास आने दो, उन्हें न रोको, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है।" मत्ती 19:14 ।।

1. अपने बच्चों के पालन पोषण के लिए **माता पिता** को अपनी सामर्थ में, वो सब इस प्रकार करना चाहिए जिससे कि बच्चे अपने जीवन के आरम्भिक दिनों में "प्रभु के पास आ जाएं" और प्रभु के साथ बने रहें। तथा ...

2. "उन्हें न रोकने" के लिए हमें अपने बच्चों का प्रशिक्षण तथा पालन पोषण प्रभु के निर्देश अनुसार करना है जो हम उसके वचन, बाइबल में पाते हैं।

यह बहुत बड़ी जिम्मेवारी है, तथा इस कारण :

I. पिताओं को अपने बच्चों को सिखाने और प्रशिक्षित करने की अगुवाई करनी चाहिए और इसकी जिम्मेवारी लेनी चाहिए।

इफिसियों 6:4 पिताओ, अपने बच्चों को क्रोध न दिलाओ, वरन् प्रभु की शिक्षा और अनुशासन में उनका पालन पोषण करो।

घर का सही और उचित क्रम यह है कि : पिता परिवार का मुखिया है (इफि 5:24 पति तो पत्नी का सिर है, जिस प्रकार मसीह भी कलीसिया का सिर है।) तथा इस कारण पिता को परमेश्वर उसकी पत्नी और बच्चों के लिए एक अच्छा आर्दश, शिक्षक और अगुवा होने की दायित्व देता है।

- जैसा हम उपरोक्त पद में देखते हैं कि पिता या तो क्रोध दिलाता है या फिर शिक्षा और अनुशासित करता है। परिवार उसके चुनाव के कारण दुःख उठाएगा या फलेगा फूलेगा।

- पिता शिक्षा की कुछ जिम्मेवारी अपनी पत्नी को सौंप सकता है। कुछ ऐसी बातें हैं जो वह बेहतर रीति से सिखा सकती है। वे एक टीम की तरह हैं।

- माता और पिता को आपस में विचार विमर्श करके इस बात की सहमति बनानी चाहिए कि वे क्या सिखाएं और कैसे सिखाएं। वे एक साथ प्रार्थना करके और पवित्र शास्त्र में ढूंढ कर उत्तर प्राप्त करें और सहमति में आएं।

नीतिवचन 22:6 : बच्चे को उसी मार्ग की शिक्षा दें जिसमें उसे चलना है, और वह बुढ़ापे में भी उस से नहीं हटेगा।

★ बच्चा अपने माता पिता को देख कर और उनके जीवन तथा एक दूसरे के साथ बरताव से प्राप्त अनुभवों से सीखता है। जो माता और पिता करेंगे उनके बच्चे भी करेंगे। जो माता और पिता के लिए महत्वपूर्ण है वो बच्चों के लिए भी महत्वपूर्ण है।

माता पिता जो करते हैं, या जिस तरह से वे आपस में तथा दुनिया के साथ सम्बन्ध रखते हैं, अधिक प्रभावशाली प्रशिक्षण होता है बजाय इसके कि वे क्या बोलते हैं। माता पिता की दार्शनिकता, संस्कृति को बच्चे जीवन जीने के मार्ग के रुप में ग्रहण कर लेते हैं।

★ शिक्षण और प्रशिक्षण देने में अन्तर है। शब्दों और उदाहरणों के साथ सिखाना शिक्षण है। प्रशिक्षण, कार्य और आदर्श के द्वारा सिखाया जाता है। शिक्षण द्वारा दिया गया पाठ केवल सीमित सफलता ही देगा। प्रशिक्षण द्वारा दिया गया पाठ पूर्ण जीवन काल की सफलता उत्पन्न करेगा जिससे "वह बुढ़ापे में भी उस से नहीं हटेगा"।

★ शायद ही बच्चे प्राप्त प्रशिक्षण से हटेंगे। अधिकांश मामलों में, वे इसे और भी चरम सीमा में ले जा सकते हैं। अकसर यह लूका 6:38 के नक्शे कदम पर चलता हैं "दिया करो तो तुम्हें भी दिया जाएगा। वे तुम्हारी गोद में पूरापूरा नाप, दबादबाकर, हिलाहिलाकर उभरता हुआ डालेंगे। क्योंकि जिस नाप से तुम दूसरों के लिए नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।"

जो कुछ भी आप अपने बच्चों को देंगे (अच्छा या बुरा), वो उनके जीवन में अधिक नाप में लौट जाएगा।

याकूब ने अपने पिता को धोखा दिया था, और इसके परिणामस्वरुप उसे वर्षों कठिन परिश्रम करना पड़ा, विवाह सम्बन्धी समस्याएं आयी और परिवार में झगड़े हुए। जिस प्रकार याकूब ने अपने पिता को झूठ और धोखा देकर उसका अनादर किया था, उसी प्रकार उसके पुत्रों ने भी उसका अनादर किया। (देखें उत्पत्ति 37:31–33)।।

★ यदि माता पिता किसी विषय पर या इस बात पर सहमत नहीं हैं कि अपने बच्चों को क्या और कैसे सिखाएं, तो फिर विरोध, विवाद और क्रोध करने की आत्मा परिवार में प्रवेश कर सकती है जो अनेक समस्याओं का कारण बन सकती है। और जैसे बच्चे प्रशिक्षित किए जाते हैं, वे अपने विवाहिक जीवन में "मार्ग से नहीं हटेंगे"।

★ छोटी आयु में बच्चे, टेलीविज़न तथा अपने मित्रों के द्वारा बहुत कुछ सीखना आरम्भ कर देते हैं। इन सबका उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है बजाय उन बातों के जो उनके माता–पिता उन्हें करने के लिए बताते हैं।

- ★ यह भला होगा, यदि समाचार और कुछ अच्छे कार्यक्रमों के अलावा टेलीविज़न न देखा जाए। यह बाहरी, तथा अकसर दुष्ट संस्कारों को घर में ले आता है। राजा दाऊद कहता है : "मैं किसी अनुचित बात को अपनी आखों के सामने न रखूंगा।" भजन संहिता 101 : 3

- ★ अपने बच्चों को अच्छी किताबें दें और प्रोत्साहित करें कि पढ़ कर अपना मनोरंजन करें न कि टी.वी. देख कर।

- ★ परिवार शाम के समय एक साथ खेलें या अन्य कार्यकलाप मिल कर करें। यह परिवारिक सम्बन्धों को मज़बूत करने में सहायता करेगा और भक्तिपूर्ण प्रशिक्षण के लिए अवसर देगा।

प्रशन हैं : "**हमारे बच्चों को क्या शिक्षा दी जानी चाहिए?**"

उत्तर : पवित्र शास्त्र से प्रभु के मार्ग और शिक्षाओं की शिक्षा। हमारा स्वर्गीय पिता हमसे प्रेम करता है तथा उसने हमारे आशिषित जीवन के लिए बाइबल के रुप में निर्देश पुस्तिका दी है।

व्यवस्थाविवरण 4:40 अतः उसकी जो विधियां तथा आज्ञाएं आज तुम्हें दे रहा हूं, उनको मानना, जिससे कि तेरा और तेरे पश्चात्तेरी सन्तान का भला हो, और तुम उस देश में दीर्घायु हो जिसे तुम्हारा परमेश्वर तुझे सदा के लिए देता है।

व्यवस्थाविवरण 6:5–7 तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, अपने सारे प्राण तथा अपनी सारी शक्ति से प्रेम कर। (6) आज मैं जिन वचनों की आज्ञा तुझे दे रहा हूं वे तेरे मन में बनी रहें। (7) और तू उनको यत्नपूर्वक अपने बालबच्चों को सिखाना, तथा अपने घर में बैठे, मार्ग पर चलते, और लेटते तथा उठते समय उनकी चर्चा किया करना।

माता पिता होना पूर्ण कालिक कार्य है, दिन के 24 घण्टे, साल के 365 दिन।
माता पिता होना, परमेश्वर द्वारा आपके लिए दी गई सेविकाई है।
इस सेविकाई में विश्वासयोग्य होना आपको आगे की सेविकाई के लिए योग्य ठहरता हैं।

माता-पिता के लिए अपने बच्चों के प्रति "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेविकाई " है :

- ★ 'प्रभु का मार्ग तैयार करो, और उसकी सड़कें सीधी करो।' लूका 3:4

- ★ प्रभु के लिए मार्ग तैयार करो ताकि आपके बच्चे के हृदय में वह मार्ग सीधा जाए।

II. बच्चों को आज्ञा मानना सीखना है।

इफिसियों 6:13
हे बालकों, प्रभु में अपने माता पिता की आज्ञा मानो, क्योंकि यह उचित है। (2) अपने माता पिता का आदर करो यह पहली आज्ञा है जिसके साथ प्रतिज्ञा भी है (3) जिससे कि तेरा भला हो और तू पृथ्वी पर बहुत दिन जीवित रहे।

★ हमें अपने बच्चों को आज्ञा मानना सिखाना है।

★ माता पिता पहले अधिकारी हैं जिनकी आज्ञा बच्चों को मानना सीखनी चाहिए। माता और पिता अपने बच्चों पर छाते के समान, सुरक्षा का कवच बन जाते हैं ताकि उन्हे शारीरिक और आत्मिक हानि से बचा सकें।

बाइबल सिखाती है कि बच्चों के ऊपर 'अधिकार की कड़ी' में पहले पिता और फिर माता हैं। यह क्रम शान्ति और आशिषें लेकर आता है।

★ छोटे बच्चों को बिना जवाब दिए स्पष्ट और तुरन्त आज्ञा मानना सीखनी चाहिए। यह उनकी आज की सुरक्षा के लिए आवश्यक है तथा जिससे वे बाद में पवित्र आत्मा द्वारा आरम्भिक प्रेरित किए जाने पर तुरन्त आज्ञा मान कर सुरक्षित रहें।

नीतिवचन 29:15 " छड़ी और डांट से बुद्धि प्राप्त होती है परन्तु जो बच्चा अपनी मनमानी करता है वह अपनी माता की लज्जा का कारण होता है।"

★ छड़ी और डांट से बुद्धि प्राप्त होती है दोनो आवश्यक है।

डांटना, अपने बच्चों को यह सिखाना है कि वे आज्ञा क्यों माने :

1) जिससे उनके जीवन में सब कुछ भला हो (इफि 6:3) तथा

2) शैतान को अपने ऊपर आक्रमण करने देने का अवसर न देना (इफि 4:17)। पाप शैतान को कानून्न अधिकार देता है कि वह हम पर आक्रमण करे (लूका 22:31)।

3) "जो बच्चा अपनी मनमानी करता है वह अपनी माता की लज्जा का कारण होता है।" वह इसलिए अपने माता पिता की लज्जा का कारण होता है क्योंकि उन्होंने अपने बच्चों को आज्ञा मानना नहीं सिखाया। "उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे" (मत्ती 7:16)।

नीतिवचन 22:15 बच्चे के हृदय में तो मूढ़ता की गांठ लगी रहती है। अनुशासन की छड़ी उसे खोलकर दूर कर देती है।

★ बच्चों को अनुशासित किया जाना चाहिए, नहीं तो उनके जीवन में मूढ़ता बनी रहेगी।

नीतिवचन 23:13 बच्चे को ताड़ना देने से न रुकना। यदि तू उसे छड़ी से पीटे तो वह मर नहीं जाएगा।

★ आज्ञोल्लंघन की सीमा के अनुसार ही अनुशासन का माप होना चाहिए। आप इस प्रकार अनुशासित कर सकते हैं :

- 15 मिनट, एक घंटे, एक दिन या एक सप्ताह के लिए उनको दी गई सुविधा छीनने के द्वारा।
- बच्चों को उनके बिस्तरे पर भेज कर जिससे उनका क्रोध शान्त हो जाए।
- अतिरिक्त कार्य देने के द्वारा
- पिटाई करने की अनुमति न केवल बाइबल के द्वारा दी गई है अपितु यह आवश्यक भी है। परन्तु यह केवल उद्धत और जानते बूझते अवज्ञाकारी बच्चों के लिए ही हो।

नीतिवचन 13:24 जो अपने पुत्र को छड़ी नहीं मारता, वह उसका बैरी है, परन्तु जो उससे प्रेम करता है, वह यत्न से उसे अनुशासित करता है।

जो कुछ करो, प्रेम से करो। 1 कुरिन्थियों 16:14

★ जब आप क्रोधित हों तो कभी अपने बच्चों को दण्डित न करें।

अपने बच्चों को बताएं :

1) **जो** गलती उन्होंने की है। यह उनके दोष स्थापित किए जाने में सहायता करेंगे।

2) आप उन्हें **क्यों** अनुशासित कर रहे हैं – क्योंकि आप उनसे प्रेम करते हैं, और यीशु भी उनसे प्रेम करते हैं, तथा जो कुछ उन्होने किया है वह गलत है। उनको बताएं कि बाइबल हमें उनको अनुशासित करने को कहती है। उनको बताएं कि उन्हें यह सब सीखना है ताकि उनके जीवन में, बाद में, कोई समस्या न आएं।

3) इसके बाद तब तक प्रार्थना और प्रतिक्षा करें जब तक आपका गुस्सा शान्त न हो जाए, और तब अपने बच्चे से सम्बन्ध रखते और नियन्त्रण के अधीनता में उसे दण्डित करें।

4) यह बताएं कि **उन्हें कैसे** दण्ड दिया जा रहा है। माता और पिता की एक साथ प्रार्थनापूर्वक सहमति होनी चाहिए कि किस अनाज्ञाकारिता को किस प्रकार का दण्ड दिया जाना चाहिए। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि माता और पिता सदैव एक दूसरे के साथ सहमति में हों तथा एक दूसरे के द्वारा किये गए निर्णयों और कार्यों में सहयोग दें। इसमें दोनो पक्षों से कुछ 'लेन – देन' की मांग होती है।

5) एकान्त में दण्ड दिया जाना चाहिए। यह इतना सख्त और देर तक होना चाहिए कि पाप के आनन्द से अधिक प्रभावशाली हो।

6) सब दण्ड समाप्त हो जाए तो अपने बच्चे को समय दें कि वह शान्त हो जाए, तथा फिर उसके साथ उस अपराध के बारे में बात करें जिससे वे स्पष्ट रीति से यह जान और समझ सकें कि आप उनसे किस प्रकार के आचरण की आशा रखते हैं।

7) **बच्चे को अपने प्रेम और क्षमा का आश्वासन दें,** इसका अर्थ यह है कि आप फिर दुबारा इस अपराध का ज़िक्र लेकर नहीं आएंगे। **एक साथ प्रार्थना करें।** धैर्य के साथ प्रतिक्षा करें और अपने बच्चे को उत्साहित करें कि वह भी प्रार्थना करे। अपराध के लिए पश्चाताप की अपनी प्रार्थना करने में बच्चे की अगुवाई करें। यह उनको इसी तरह से प्रभु की ओर प्रतिक्रिया देने में प्रशिक्षित करेगा ।

★ कभी भी आप अपने बच्चे को अपने हाथों से पिटाई या थप्पड़ मार कर अनुशासित **न करें।** छोटी चमड़े की पेटी, लकड़ी का लम्बा चम्मच या पतली बेंत जैसी वस्तुओं का इस्तेमाल केवल बच्चों के **निचले भागों पर करें।** इस्तेमाल की जाने वाली वस्तु एक सी रखें ताकि जब आप उसे उठाएं तो वे उसे देख कर डरें। परन्तु आपको यह नहीं चाहिए कि वे आपके हाथों को देख कर डरें जो केवल प्रेम और स्नेह बताने वाले स्पर्श के लिए होने चाहिए।

★ आपके अनुशासन के कारण कभी भी आपके बच्चे को चोट नहीं पहुंचनी चाहिए। आपके द्वारा पिटाई से कभी भी चोट या अन्य निशान न छोड़े।

★ हम अपने बच्चों को अनुशासित करते हैं क्योंकि हम उनसे प्रेम करते हैं। हमारे बच्चों को यह बात **पूरी तरह से जान कर निश्चित** होना चाहिए कि हम उन्हें अनुशासित कर रहे हैं **क्योंकि हम उनसे बहुत प्यार करते हैं**। हम जानते हैं कि प्रभु हमसे प्रेम करता है क्योंकि उसने हमारे लिए बलिदान दिया। पिताओं को यही अपने बच्चों के लिए करना है। उनको थामें/उनके साथ बात–चीत करें/ समय बितायें/ उनका आदर करें जिससे वे जानें कि वो आपके लिए बहुत अधिक प्रिय हैं।

यदि वे यह नहीं जानते कि आप उनसे प्रेम करते हैं, या आप उनके साथ बहुत सख्त है तो फिर उन्हें केवल ''क्रोध दिला रहे हैं ''(इफि 6:4) यह उनके हृदय में विद्रोह उत्पन्न करेगा जो बाद में उनके जीवन में दिखाई देगा।

इब्रानियों 12:6–8 क्योंकि **प्रभु जिससे प्रेम करता है उसकी ताड़ना भी करता है,** और जिसे पुत्र बना लेता है उसे कोड़े भी लगाता है।(7) तुम दुख को ताड़ना समझ कर सह लो, क्योंकि परमेश्वर तुम्हे पुत्र जान कर तुम्हारे साथ व्यवहार करता है। वह कौन सा पुत्र है जिसकी ताड़ना उसका पिता नहीं करता? (8) पर यदि वह ताड़ना जो सब की होती है, तुम्हारी नहीं हुई तो तुम पुत्र नहीं, परन्तु व्यभिचार की सन्तान ठहरे।

इब्रानियों 12:11 सब प्रकार की **ताड़ना** कुछ समय के लिए सुखदायी नहीं, परन्तु दुखदायी प्रतीत होती है, फिर भी जो इसके द्वारा **प्रशिक्षित** हो चुके हैं, उन्हें बाद में धार्मिकता का शान्तिदायक फल प्राप्त होता है।

1 शमूएल 15:23 क्योंकि विद्रोह करना **और भावी कहने वालों से पूछना एक ही समान** पाप है और **हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य अधर्म** है।

- ★ अपने ऊपर अधिकारियों की आज्ञाजान बूझ कर न मानना और उनसे फिर जाना **विद्रोह** है।
- ★ कुछ अपने तरीके और / अपने समय से करना या करवाना **हठ करना** है।
- ★ चालाकी अपने तरीके से कुछ प्राप्त करने का चतुर या कुटिल प्रबन्धन है। बच्चे, और साथ ही हम में से बहुत से लोग भी इस काम में बहुत निपुण होते हैं।
- ★ विद्रोह, हठ और चालाकी गंभीर पाप हैं और यह शैतान को हमला करने का वैधिक अधिकार देते हैं। क्योंकि स्वाभाविक तौर से बच्चे छुटपन से ही अपने तरीकों की कोशिश करते हैं, इसलिए इस पाप की ओर ध्यान दे कर उसे उनके हृदयों से निकालना और अनुशासित किया जाना चाहिए।

नीतिवचन 22:6 बच्चे को उसी मार्ग की शिक्षा दें जिसमें उसे चलना है, और वह बुढ़ापे में भी उससे नहीं हटेगा।

जो कुछ करो, प्रेम से करो। 1 कुरिन्थियों 16:14

III. बच्चों को समस्त अधिकारियों की आज्ञा मानना सीखना है

जब बच्चे अपने माता और पिता को समस्त अधिकारियों की आज्ञा मानते देखेंगे तो वो भी समस्त अधिकारियों की आज्ञा मानना सीखेंगे (बच्चे जो अपने माता–पिता को करते देखते हैं वही सीखते हैं)।

रोमियो 13:1–7 हर एक व्यक्ति शासकीय अधिकारियों के अधीन रहें, क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। (2) इसलिए जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का सामना करता है, और सामना करने वाले दण्ड पाएंगे।(3) क्योंकि हाकिम अच्छे काम के नहीं, परन्तु बुरे काम के लिए डर का कारण है; अतः यदि तू हाकिम से निडर रहना चाहता है, तो अच्छा काम कर, और उसकी ओर से तेरी सराहना होगी; (4) क्योंकि वह तेरी भलाई के लिए परमेश्वर का सेवक है। परन्तु यदि तू बुराई करे, तो डर, क्योंकि वह तलवार व्यर्थ लिए हुए नहीं; और परमेश्वर का सेवक है कि उसके क्रोध के अनुसार बुरे काम करने वाले को दण्ड दे। (5) इसलिए अधीन रहना न केवल उस क्रोध के डर के लिए आवश्यक है, वरन् विवेक भी यही गवाही देता है। (6) इसलिए **कर भी दो** क्योंकि शासन करने वाले परमेश्वर के सेवक हैं और सदा इसी काम में लगे रहते हैं। (7) इसलिए **हर एक का हक्क चुकाया करो**; जिसे कर चाहिए, उसे कर दो; जिसे महसूल चाहिए, उसे महसूल दो; जिससे डरना चाहिए, उससे डरो; **जिसका आदर करना चाहिए, उसका आदर करो।**

मत्ती 22:19–21
कर का सिक्का मुझे दिखाओ।'' तब वे उसके पास एक दिनार ले आए। (20) उसने उनसे पूछा, ''यह छाप और नाम किसका है?''(21) उन्होंने उससे कहा, ''कैसर का।'' तब उसने उनसे कहा, ''**जो कैसर का है, वह कैसर को; और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो**।''

मत्ती 8:8–10
सूबेदार ने उत्तर दिया, ''हे प्रभु, मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरी छत के तले आए, परन्तु केवल मुख से कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।(9) क्योंकि मैं भी **पराधीन मनुष्य हूं,** और सिपाही मेरे अधीन हैं। जब मैं एक से कहता हूं, 'जा!' तो वह जाता है; और जब अपने दास से कहता हूं, 'यह कर!' तो वह करता है।''(10) यह सुनकर यीशु को अचम्भा हुआ, और जो उसके पीछे आ रहे थे उनसे कहा, '' मैं तुमसे सच कहता हूं कि **मैंने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया**।

जॉन वैसली अब तक के महानतम् प्रचारकों में से एक थे। उसने तथा कुछ अन्य प्रचारकों ने इंग्लैड को उस क्रान्ति के कारण हुई समाजिक, आर्थिक, नैतिक और सैनिक विध्वंसता से बचाया, जिसने बाद में फ्रांस को ढाह दिया। वैसली जागृति 1740 के दशक में अमेरिका में फैल गई। इसके कारण नैतिक वातावरण उत्पन्न हुआ जिसमें युवा जार्ज वाशिंगटन और अमेरिका के अन्य महान नेता बड़े हुए तथा जिन्होंने बाद में संयुक्त राज्य अमेरिका का गठन किया, जो महान राष्ट्र बना।
वैसली अपने 87 वर्षों के जीवन में परमेश्वर के मार्ग में परमेश्वर की इच्छा के प्रति पूर्णतः समर्पित था। उसका जीवन यह गवाही देता है कि मां को यदि अपने बच्चों को प्रशिक्षित करने के दर्शन है तो वह क्या कर सकती है। सूसन्ना वैसली के उन्नीस बच्चे थे। वह परिवारिक खेती करती थी और पास्टर की पत्नी होने के नाते बाइबल क्लास भी लिया करती थी। वह अपने बच्चों की आरम्भिक स्कूल शिक्षिका थी। बच्चों को प्रशिक्षित करने की उसकी कूंजी यह थी कि जितना जल्दी हो प्रत्येक बच्चा अपने ऊपर अधिकारिता को स्वीकार करे। एक पत्र में उसने लिखा : ''मैं बच्चों की इच्छा पर काबू करने पर ज़ोर देती हूं क्योंकि जब यह पूर्णतः हो जाता है तो बच्चे, अपने माता–पिता की भक्ति और समझ द्वारा संचालित हो सकते हैं, तब तक जब तक कि वह परिपक्व हो कर अपनी समझ प्राप्त नहीं करते और उनके मनों में बाइबल के सिद्धान्त अपनी जड़ बना लें। मैं फिर भी इस विषय को छोड़ नहीं देती। जैसे आत्म–इच्छा सारे पापों और दुखों का कारण है, तथा जो कुछ भी इसको बच्चों में बढ़ावा देने में प्रोत्साहित करती है वह उनके दुखों को निश्चित करती है, तथा जो कुछ भी इसे समाप्त करने का कारण बनती है वह बच्चों के भविष्य के सुख और

भक्ति को बढ़ावा देती है।''

बच्चों के सख्त अनुशासन और उनको प्रशिक्षित करने का एक बहुत ही महत्वपूर्ण और आवश्यक कारण यह है कि बच्चे को अपनी आत्म–इच्छा को काबू करना और विजय पाना सिखाएं।

जॉन वैसली की मां ने लिखा : ''जो मां–बाप अपने बच्चे की आत्म–इच्छा को बढ़ने की अनुमति देते हैं, वो शैतान का काम करते हैं।''

इसे पूर्ण करने का एक तरीका यह है कि बच्चों के लिए एक पक्का और सुरक्षित बाड़ा बना दें जिससे वे यह स्पष्ट रीति से जान सकें कि वो क्या कर सकते हैं और क्या नहीं। और, यह भी कि इस बाड़े को तोड़ने या सीमा पार जाने की क्या सज़ा होगी। फिर आप माता–पिता के लिए बहुत आवश्यक है कि जब भी सीमा टूटे तो उसकी निर्धारित सज़ा देने में आप नियमित रहें। आपकी यह नियमिता न सिर्फ बच्चे की सहायता करेगी कि वह अपनी इच्छा को नियंत्रित करे परन्तु यह उनमें सुरक्षा की भावना और स्पष्ट विवेक भी लेकर आएगी, जिसकी उसको ज़रुरत है।

सूसन्ना वैसली जानती थी कि उसके बच्चे बिना उसके अधिकार को स्वीकार करे, उसके प्यार को पहचान या सराह नहीं पाएंगे, उसके ज्ञान से लाभ नहीं उठा पाएंगे और न ही अच्छे नैतिक चरित्र में बढ़ पाएंगे।

नीतिवचन 22:6 बच्चे को उसी मार्ग की शिक्षा दें जिसमें उसे चलना है, और वह बुढ़ापे में भी उससे नहीं हटेगा।

जो कुछ करो, प्रेम से करो। 1 कुरिन्थियों 16:14

IV. पारिवारिक आराधना

2 तीमुथियुस 3:16–17 **सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र** परमेश्वर की **प्रेरणा** से रचा गया है और **शिक्षा, ताड़ना, सुधार** और धार्मिकता की **शिक्षा** के लिए **उपयोगी** है, जिससे कि परमेश्वर का भक्त प्रत्येक भले कार्य के लिए कुशल और तत्पर हो जाए।

2 तीमुथियुस 2:15 अपने आपको परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।

- ★ बच्चों को यह देखने और जानने की आवश्यकता है कि बाइबल मां और पिता के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है।
- ★ कभी–कभी संध्याकालीन पारिवारिक समय के दौरान, पवित्रशास्त्र का एक भाग पढ़ कर, पिता की अगुवाई में सब को उस भाग पर एक साथ विचार करना चाहिए।

पिता को चाहिए कि वह इस विचार विमर्श में सभी को सम्मिलित करे, बच्चों से पूछे कि वो इस बारे में क्या सोचते हैं, इस भाग से हम क्या सीख सकते हैं और इसे हम किस प्रकार प्रयोग में ला सकते हैं। मसीही भजन और गीत गाने चाहिए। जैसा कि कहा जाता है, ''जो परिवार एक साथ प्रार्थना करता है, एक साथ मिला रहता है।''

★ पूरे परिवार को एक साथ किसी एक पद या एक भाग कंठस्थ करने का प्रयास करना चाहिए। जैसे ही वैसली बच्चों ने बोलना सीखा, उन्हें प्रभु की प्रार्थना (मत्ती 6:9–13) सिखाई गई और प्रत्येक सुबह और शाम परिवार इसे बोलते थे। उन्हें सिखाया गया कि प्रार्थना के दौरान आंखें बन्द कर के शान्त रहें जिससे उस बात पर जो वो बोल रहे हैं ध्यान लगा सकें।

★ वैसली बच्चों को सिखाया गया कि प्रभु का दिन अन्य दिनों से भिन्न है, क्योंकि यह दिन थोड़ा काम करने और परिवार के साथ विश्राम करने का दिन है।

★ लक्ष्य यह है कि आपके बच्चे यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित करें तथा प्रभु के साथ प्रति दिन की चाल का आरम्भ करें।

✍ सम्बन्ध बनाने मे बात–चीत की मांग होती है, एक दूसरे से बात करना। आप जिनसे प्यार करते हैं उनके साथ समय बिताते है और बातें करते हैं। दूसरों के साथ ... ?

✍ जितना समय आप अपने बच्चों से बात–चीत करने और उनकी सुनने में लगाएंगे, उतना ही अधिक बेहतर आपके उनके साथ सम्बन्ध बनेंगे।

✍ जितना अधिक समय वे प्रभु से बात करने और उसकी आवाज़ 'सुनना' सीखने में लगाएंगे, उतना ही अधिक उनके प्रभु के साथ सम्बन्ध बेहतर होंगे।

✍ अपने बच्चों को सिखाएं और प्रशिक्षित करें कि सुबह उठते ही उनका सबसे पहला काम प्रार्थना में समय बिताना हो तथा रात में सोने से पहले अन्तिम कार्य भी।

उन्हें हर छोटी –छोटी बातों में धन्यवाद देना सिखाएं – उनके हृदय की हर धड़कन का, आंखों से परमेश्वर की सृष्टि देखने का, उसकी बनाए पक्षियों की आवाज़ सुनने के लिए कानों का, उसकी सृष्टि को समझ सकने की बुद्धि का, अपने माता और पिता का, भाईयों और बहनों का, खाना, सेहत ... हर एक छोटी से छोटी बात का।

मत्ती 6:5–8 जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों के समान न हो, क्योंकि लोगों को दिखाने के लिए आराधनालय में और सड़कों के मोड़ों पर खड़े हो कर प्रार्थना करना उनको अच्छा लगता है। मैं तुमसे सच कहता हूं कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द करके अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर। तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा। प्रार्थना करते समय अन्य जातियों के समान बक–बक न करो, क्योंकि वह समझते हैं कि उनके बहुत बोलने से उनकी सुनी जाएगी। इसलिए तुम उनके समान न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहले ही जानता है कि तुम्हारी क्या–क्या आवश्यकताएं हैं।

नीतिवचन 22:6 बच्चे को उसी **मार्ग** की **शिक्षा दें** जिसमें उसे चलना है, और वह बुढ़ापे में भी उससे नहीं हटेगा।

जो कुछ करो, **प्रेम से करो।** 1 कुरिन्थियों 16:14

V. सदगुणों का विकास ही लक्ष्य है।

2 पतरस 1:5 ''तुम **सब प्रकार का यत्न करके** अपने विश्वास पर **सदगुण ...** बढ़ाते जाओ''

नीतिवचन 11:3 सीधे लोग अपनी **खराई** से अगुवाई पाते हैं, परन्तु विश्वासधाती अपने कपट से नष्ट होते हैं।

- ★ **खराई** – एक अच्छा सदगुण जीवन जीने का स्तर
- ★ **खराई** शब्द का मूल अर्थ है **''ईमानदारी से जीना''** और न कि सिर्फ दिखावे के लिए जो सही है वह करना।
- ★ **खरे** व्यक्ति के पास **अन्दरुनी दृढ़ विश्वास** होता है जो उसके **बाहरी व्यवहार को नियंत्रित** करता है।

1 तीमुथियुस 1:18–19 **विश्वास** और उस **अच्छे विवेक** को थामे रह, जिसे **दूर करने के कारण** कितनों का विश्वास रुपी जहाज़ डूब गया।

- ★ अपने बच्चों की सहायता करें कि वह सबसे पहले **अच्छे** और **स्पष्ट** विवेक की आज्ञा मानने के द्वारा आनन्द बनाए रखें, परन्तु यदि वे ऐसा नहीं कर पाते हैं, तो पवित्र आत्मा द्वारा **कायल** किये जाने को पहिचाने तथा अपने माता–पिता और परमेश्वर के प्रति किए गए गलत व्यवहार को (1 यूहन्ना 1:9) **स्वीकार करें**।

1तीमुथियुस 4:2 से **दागा गया** है यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा, **जिसका विवेक** मानो जलते हुए लोहे

1 तीमुथियुस 1:5 से **प्रेम** उत्पन्न हो। आज्ञा का **सारांश** यह है कि **शुद्ध मन** और **अच्छे विवेक**, और **कपट रहित विश्वास**

1 कुरिन्थियों 13:4–8 **प्रेम धीरजवन्त है,** और **कृपालु** है; प्रेम **डाह** नहीं करता; प्रेम **अपनी बड़ाई नहीं करता** और **फूलता नहीं;** वह **अनरीति नहीं चलता,** वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झूंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु **सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीती करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है** ... प्रेम कभी टलता नहीं।

रोमियों 13:9–10 और कोई भी आज्ञा हो तो सब का सारांश इस बात में पाया जाता है, "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।" **प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता,** इसलिए प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है।

सबसे महत्वपूर्ण बात जो आप अपने बच्चे को सिखा /शिक्षा दे सकते हैं वह यह है कि :

"तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है कि **तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।**" मत्ती 22:37–40

बच्चों में अच्छे चरित्र की विशेषताएं विकसित करने के लिए, माता–पिता को चाहिए कि उनके जीवन में अच्छे चरित्र की विशेषताएं प्रदर्शित हो ताकि बच्चे उसे देखें, सीखें और उसका अनुसरण करें।

माता–पिता ध्यान रखें :
परमेश्वर का अनुग्रह और सहायता उन सब को उपलब्ध है जो कोई भी उसका नाम पुकारते हैं।

2 कुरिन्थियों 9:8 परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिससे हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे; और हर एक भले काम के लिए तुम्हारे पास बहुत कुछ हो।
परमेश्वर आपके बच्चों को प्रशिक्षित करने में आपकी सहायता करेगा।

इफिसियों 5:2 और **प्रेम से चलो** जैसा मसीह ने भी तुमसे प्रेम किया, और हमारे लिए अपने आप को ... बलिदान कर दिया।

कुलुस्सियों 1:10 ताकि तुम्हारा चाल–चलन प्रभु के योग्य हो, और **वह सब प्रकार से प्रसन्न हो,** और तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे

1 थिस्सलुनीकियों 4:1 जैसे तुमने योग्य चाल चलने और परमेश्वर को प्रसन्न करने की शिक्षा पाई है – जैसे कि तुम सच मुच चलते भी हो – वैसे ही और भी अधिक बढ़ते जाओ।

★ **माता–पिताओं द्वारा जीया अनुशासित जीवन, बच्चों को प्रशिक्षित करने में पहला कदम है, जिससे ...**

- **वह वही करेगा जो सही है,** सही तरीके से, सही समय पर, सही दृष्टिकोण के साथ चाहे वह कार्य कठिन या असामान्य क्यों न हो।
- वह **सही काम करे** चाहे उसमें उसे कठिनाई या अधिक मुल्य क्यों न चुकाना पड़े।

★ **बच्चों को सिखाना चाहिए कि जो सही है वही करें** – और उनसे वह करवायें – जब तक कि वे स्वतः या स्वाभाविक तौर से जो सही है वो न करने लगें।

★ अन्तिम लक्ष्य – पूर्णतः अवश्यक – यह है कि बच्चा उनके चरित्र के आधार पर अपने आप को अनुशासित करने लगे।

1 कुरिन्थियों 9:27 मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूं।

कुलुस्सियों 2:5 तुम्हारे व्यवस्थित जीवन को और तुम्हारे विश्वास को, जो मसीह में है, दृढ़ता देखकर प्रसन्न होता हूं।

1 तीमुथियुस 4:7 भक्ति के लिए अपने आप को अनुशासित कर।

जब परमेश्वर ने शैतान को कहा कि अय्यूब की कष्टों के बावजूद ... "उसके समान निर्दोष और खरा तथा परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने वाला, अन्य कोई नहीं है।" (अय्यूब 2:3) ... वह जानता था कि अय्यूब खरा मनुष्य है।

अय्यूब ने अपने परिवार, अपनी सम्पत्ति, तथा स्वास्थ्य ले लिए जाने पर भी परमेश्वर पर भरोसा और सही कार्य करना नहीं छोड़ा। उसके पास खराई या चरित्र था। वह सही कार्य करता रहा क्योंकि वो उसके अन्दर गहराई में था। यही खराई का जीवन है।

✎ इस संसार को अय्यूब के समान और लोग चाहिए!

रोमियों 5:3–4 हम अपने **क्लेशों** में भी **आनन्दित** होते हैं, क्योंकि यह जानते हैं कि क्लेश में धैर्य उत्पन्न होता है, तथा धैर्य से **खरा चरित्र**।

जैसे कि कहावत है – नींबू को निचोड़ोगे तो नींबू का रस बाहर निकल आएगा।
यह सच है कि जो कुछ भी हमारे अन्दर होता है वो दबाव डालने पर बाहर आ जाता है।

नीतिवचन 22:6 बच्चे को उसी **मार्ग** की **शिक्षा दें** जिसमें उसे चलना है, और वह बुढ़ापे में भी उससे नहीं हटेगा।

जो कुछ करो, **प्रेम से करो।** 1 कुरिन्थियों 16:14

VI. प्रत्येक के जीवन में आवश्यक महत्वपूर्ण चरित्र विशेषताएं :

चरित्र – आप जो है, तब जब कोई नहीं परन्तु परमेश्वर देख रहा है।

आज्ञाकारिता – जो अधिकार में लोग चाहते हैं, वो करना।

★ यह "अपना काम अपने तरीके से करना" या आत्म–इच्छा के विपरीत है।

लूका 9:24 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई अपना प्राण मेरे लिए खोए वह उसे बचाएगा।

★ सच्ची आज्ञाकारिता में शामिल है वह करना जो अधिकारी करने के लिए बोलें या चाहें।
और तुरन्त, आदरपूर्वक, खुशी से तथा पूर्णतः कार्य करना।

★ अपने ऊपर अधिकारियों के प्रति आज्ञाकारिता, परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता है। वह वो प्रभु है जो हमें अधिकारियों की अधीन रहने की आज्ञा देता है, चाहे वो अच्छे हों या बुरे।

यूहन्ना 3:36	पुत्र की बात मानें
प्रेरितों के काम 5:29	हमारे लिए परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना आवश्यक है।
इफिसियों 6:1	अपने माता–पिता की आज्ञा मानो
कुलुस्सियों 3:22	उनकी सब बातों में आज्ञा मानो जो पृथ्वी पर तुम्हारे स्वामी हैं।
2 थिस्सलुनीकियों 1:8	प्रभु यीशु के सुसमाचार को मानें
इब्रानियों 13:17	अपने अगुवों की आज्ञा मानो और उनके अधीन रहो।
1 पतरस 1:2	यीशु मसीह की आज्ञा का पालन करो

नीतिवचन 22:6 बच्चे को उसी **मार्ग** की **शिक्षा दें** जिसमें उसे चलना है, और वह बुढ़ापे में भी उससे नहीं हटेगा।

जो कुछ करो, **प्रेम से करो।** 1 कुरिन्थियों 16:14

सम्मान देना – दूसरों को सच्चा आदर और उच्च महत्व देना।

स्वर्णिम नियम:
जैसा कि तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो। मत्ती 7:12

सम्मान देना यह है:

- ★ पहचानना कि दूसरे भी प्रभु के द्वारा प्रेम किए जाने वाले और बहुत अधिक मुल्यवान हैं। उनका मुल्य इस बात से निधार्रित होता है कि उनको छुड़ाने के लिए यीशु मसीह ने दाम चुकाया या अपने लिए मोल ले लिया।

- ★ मां और पिता को आपस में तथा अन्य लोगों के साथ, अपने शब्दों और व्यवहार में बहुत सम्मान प्रकट करना चाहिए तथा बच्चों को भी ऐसा ही करने की शिक्षा देनी चाहिए। कभी भी निरादर करने वाले या चोट पहुंचाने वाले शब्द या कार्य न हों।

- ★ माता–पिता को चाहिए कि हमेशा अपने बच्चों को सम्मान देते हुए उत्तर दें जिससे बच्चे की व्यक्ति के रुप में योग्यता को बल मिलेगा, चाहे वह अनुशासन के दौरान ही क्यों न हो।

  कुलुस्सियों 4:6 तुम्हारी बात–चीत सदैव अनुग्रहमयी और सलोनी हो कि तुम प्रत्येक व्यक्ति को उचित उत्तर देना जान जाओ।

- ★ माता–पिता को किसी अन्य जाति, जन समुह, जाति या वर्ग के लिए द्वेष की भावना **नहीं होनी चाहिए**।

- ★ **लड़के स्त्रियों की इज़्जत करना** सीखते है, जब वो अपने पिता को देखते हैं कि वो किसी महिला के घर में आने पर खड़े हो जाते हैं, या जिस प्रकार से वह अपनी मां और बेटियों को खाने की मेज़ पर बैठाते हैं, उनके लिए दरवाज़ा खोलते हैं, और वो सब जो उनका आदर करते हैं। लड़कों को यह सिखाना चाहिए कि वे भी इसी प्रकार से करें।

लैव्यव्यवस्था 19:32 ''सफेद बाल वालों के सामने उठ खड़े होना और वृद्ध का आदर करना, और अपने परमेश्वर का भय मानना। मैं यहोवा हूं।''

रोमियों 13:7 इसलिए **जिसे जो देना है, उसे दो ... जिसका आदर करना है, उसका आदर करो।**

- ★ बच्चों को इन बातो का **आदर** करने की शिक्षा देनी चाहिए :

  - ➢ **अपनी चीज़ो की** – अपने कमरे, कपड़ों को साफ़ रखने के द्वारा तथा खिलौनो से खेलने के बाद उन्हें उठा कर अपनी जगह वापस रखने के द्वारा। सवेरे उठकर अपना बिस्तर ठीक करना।

- दूसरों की वस्तुओं और सम्पत्ति का सम्मान करें, दूसरों की व्यक्तिगत चीज़ों को न लेने या बिना अनुमति के इस्तेमाल न करने के द्वारा। और यदि आप को अनुमति मिल जाती है, तो उसका विशेष देख-भाल करें और हमेशा उसे वापस उसके स्थान पर लौटा दें।

- दूसरों के स्थान और गोपनीयता का सम्मान करें, आरम्भ उनके परिवार के साथ करें।

1 पतरस 2:18 "आदर पूर्वक अपने स्वामियों के अधीन रहो – केवल उन्हीं के नहीं जो भले और विनम्र हैं, परन्तु उनके भी जो निर्दयी हैं।

लूका 18:2 "किसी नगर में एक न्यायाधीश था जो न तो परमेश्वर से डरता था और न किसी मनुष्य की परवाह करता था।

★ परमेश्वर के लिए हमारा भय या आदर तथा दूसरों के लिए हमारा सम्मान दोनो साथ-साथ जाता है।

★ बच्चों को परमेश्वर के भक्तिपूर्ण भय और सारे मनुष्यों के सम्मान की शिक्षा देनी चाहिए।

लैव्यव्यवस्था 19:30 तुम मेरे सब्त के दिनों को मानना और मेरे पवित्र स्थान का आदर करना। मैं यहोवा हूं।

★ परमेश्वर के लिए भक्तिपूर्ण आदर की शिक्षा :

- सभी के साथ प्रार्थना करते समय, जैसे भोजन के समय, अपने सिर को झुका कर और आंखें बन्द करने के द्वारा सिखानी चाहिए। आंखें बन्द करना बच्चों की सहायता करेगा कि वे प्रभु पर ध्यान बनाएं न कि दूसरे बच्चों या भोजन पर।

- कलीसिया में जाते समय अच्छे से तैयार हो कर जाने से और जब तक वहां रहें ध्यान दे कर सुनें और कार्यक्रमों में हिस्सा लेने के द्वारा सीखें।

- सूसन्ना वैसली अपने बच्चों को भोजन के लिए अच्छे वस्त्र पहना कर तैयार करती थी और उन्हें अच्छे शिष्टाचार सिखाती थी जो दूसरों का आदर हो।

लूका 20:13 "मैं क्या करुं? मैं अपने प्रिय पुत्र को भेजुंगा, कदाचित वे उसका सम्मान करें।" क्या उन्होंने किया ???

बच्चे को उसी **मार्ग** की **शिक्षा दें** जिसमें उसे चलना है, और वह बुढ़ापे में भी उससे नहीं हटेगा।

जो कुछ करो, **प्रेम से करो।** 1 कुरिन्थियों 16:14

कृतज्ञता (आभारी)

लूका 17:15–17 तब उन में से एक ने जब देखा कि मैं चंगा हो गया हूं तो ऊंची आवाज़ से परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ लौट आया, और उसे धन्यवाद देते हुए मुंह के बल उसके चरणों पर गिर पड़ा। वह एक सामरी था। इस पर यीशु ने कहा, "क्या दस के दस शुद्ध नहीं हुए थे, तो फिर वे नौं कहां हैं?"

इन सब विशेषताओं में, हम में से अधिकांश के साथ 'कृतज्ञता' स्वभाविक नहीं है।

1 थिस्सलुनीकियों 5:18 प्रत्येक परिस्थिति में धन्यवाद दो, क्योंकि मसीह यीशु में तुम्हारे लिए परमेश्वर की यही इच्छा है।

2 थिस्सलुनीकियों 2:13 परन्तु भाईयों, प्रभु के प्रियों हमें तुम्हारे लिए सर्वदा परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए

इब्रानियों 13:15 अतः हम यीशु के द्वारा स्तुति रुपी बलिदान परमेश्वर को सर्वदा चढ़ाया करें, अर्थात उन होंठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं।

जैसे ही बच्चे बोलना सीखते हैं उन्हें 'धन्यवाद' बोलना सिखाना चाहिए। खाने के लिए धन्यवाद बोलना, किसी भी चीज़ के लिए जो उन्हें दी जाती है या उनके लिए किया जाता है। हर तरह से धन्यवादी होना उनमें विकसित करें।

1 कुरिन्थियों 4:7 तेरे पास क्या है जो तुझे नहीं मिला? यदि वह तुझे मिला है तो फिर घमण्ड क्यों करता है मानो तुझे मिला ही नहीं?

जब हम इस प्रशन का उत्तर प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं तो हमे यह अनुभूति होने लगती है कि परमेश्वर और अन्य लोगों द्वारा हमें कितना मिला है।

- ★ अपने बच्चों की सहायता करें कि वे यह देखें और समझें तथा कृतज्ञता का व्यवहार बनाएं।
  - ➢ जो कुछ भी उन्हें दिया जाए और उनके लिए किया जाए तो 'धन्यवाद' बोलें।
  - ➢ लिख कर "धन्यवाद" दें।
  - ➢ उन्हें इस बात के कृतज्ञ होना सिखाएं कि वो लड़के या लड़की हैं। यह कभी न कहें कि "अगर तू लड़का होता ..." या "अगर तू लड़की होती ..."।

- जिस तरह परमेश्वर ने उन्हें बनाया है उस बात के लिए उन्हें कृतज्ञ होना सिखाएं,जैसे उनकी आंखें, नाक, बाल, लम्बाई, चमड़ी का रंग आदि।
- खाने के समय धन्यवाद देने के द्वारा उन्हें सीखने दें

पांच हज़ार को खाना खिलाते समयः "तब यीशु ने रोटियां लीं, और धन्यवाद करके, उन्हें जो बैठे थे बांट दी।" यूहन्ना 6:11

- अपने बच्चों को सिखाएं कि सब प्रार्थनाओं में परमेश्वर के लिए आभार और धन्यवाद शामिल करें।

फिलिप्पियों 4:6 किसी भी बात की चिन्ता न करो, परन्तु प्रत्येक बात में प्रार्थना और निवेदन के द्वारा तुम्हारी विनती धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत की जाए।

धन्यवाद और आभारी होने के व्यवहार को बनाना अत्यंत महत्वपूर्ण है जिससे ऐसा हृदय विकसित हो जो परमेश्वर के प्रति संवेदनशील हो।

रोमियों 1:21–24 इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उनका निर्बद्धि मन अन्धेरा हो गया। (22) वे अपने आपको बद्धिमान जता कर मूर्ख बन गए, (23) उन्होंने अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों और रेंगने वाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला।(24) इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उनके मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिए छोड़ दिया ...

बच्चे को उसी **मार्ग** की **शिक्षा दें** जिसमें उसे चलना है, और वह बुढ़ापे में भी उससे नहीं हटेगा।

जो कुछ करो, **प्रेम से करो।** 1 कुरिन्थियों 16:14

सच्चाई /ईमानदार

सच्चाई एक ऐसा मार्ग है जिसके द्वारा हम दूसरो का **भरोसा ठीक–ठीक** तथ्यों और घटनाओं को बता कर, बिना अपनी सफ़ाई दिए, बिना कुछ ढांपे या बढ़ा–चढ़ा कर बताए, **जीत** सकते हैं।

इफिसियों 4:25 **झूठ बोलना छोड़ कर,** अपने पड़ोसी से सच बोले।

इफिसियों 4:15 **प्रेम में सच्चाई से चलते हुए** सब बातों में उसमें जो सिर है अर्थात **मसीह में बढ़ते जाएं।**

- केवल सत्य बोलने से ही हम मसीह में बढ़ते या परिपक्व होते हैं।
- जब हम झूठ बोलते हैं तो हम शैतान के कार्य को करते हैं।
  यूहन्ना 8:44 "... शैतान ... सत्य पर स्थिर नहीं रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं ... वह झूठ बोलता ... अपने स्वभाव ही से बोलता है, क्योंकि **वह झूठा है** और **झूठ का पिता** है।"

★ पूरे परिवार(माता–पिता भी) और बच्चों को यह समझ पाने में सहायता करें कि सब यह **प्रण लें कि कभी झूठ नहीं बोलेंगे**। यह करने में बहुत कठिन कार्य है परन्तु इस पर गंभीरता से कार्य करें और सुधार धीरे धीरे आएगा। एक दूसरे की सहायता करें, आपस में अपनी असफलताओं (झूठ) को स्वीकारें, आत्म–प्रेरणा के पश्चात झूठ स्वीकारने पर जहां तक हो सके क्षमाशील बनें। जिस प्रकार अदालत में कहते हैं : ''मैं सच बोलूंगा, पूरा सच, और सच के सिवाय कुछ नहीं बोलूंगा।''

★ यह माता–पिता के लिए आवश्यक है कि वो यह कहते हुए बच्चों को **अच्छे चरित्र की विशेषताओं के लिए प्रोत्साहित करें** जैसे, ''मैं कदर करती/करता हूं कि तुम प्रायः हमेशा सच बोलते हो।'' ''मैं समझता हूं कि तुम ज़्यादा से ज़्यादा सच बोलने लगे हो और तुम झूठे नहीं हो।''

★ आपके **सकारात्मक प्रोत्साहन** के साथ बच्चे प्रयत्न करेंगे कि आपके कहे अनुसार जीएं। यह न बोलें जैसे, ''तुम झूठे हो।'' आपका बच्चा यह न सुने या मानना आरम्भ करे कि ''मैं झूठा हूं।'' परन्तु यह मानना आरम्भ करे ''मैं सच बोलता हूं।''

★ **कभी बच्चे पर झूठा होने का आरोप न लगाएं** जब तक आप पूर्ण रुप से निश्चित न हों। जब आपको झूठ होने पर शक हो तो प्रभु से प्रार्थना करें और झुठ को सामने लाने के लिए मांग करें।

★ सच्चाई विकसित करने में वास्तविक सहायता यह है कि आपका बच्चा गिनती 32:23 के सत्य और वास्तविकता को पहिचाने : **जान रखो कि तुमको तुम्हारा पाप लगेगा**।

नीतिवचन 12:22 झूठों से यहोवा को घृणा आती है, परन्तु जो विश्वास से काम करते हैं, उनसे वह प्रसन्न होता है।

★ बच्चों के सामने **आप अपने जीवन** को **सच्चाई** और असफलता **मानने** का उदाहरण बनाएं। किसी मनगढ़न्त कहानियों या सन्ता क्लॉस के बारे में झूठ न बोलें। उनके लिए यह प्रशन बन सकता है कि 'क्या परमेश्वर सच–मुच में है?'

★ यह नियम बना लें कि यदि बच्चा सच को मान लेता है और आगे से गलती न दोहराने का वायदा करे तो दण्ड कम कर दिया जाएगा। यह लम्बे समय तक बच्चे को झूठ न बोलने के लिए प्रोत्साहित करेगा और यदि वे करते हैं तो मानेंगे।

बच्चे को उसी **मार्ग** की **शिक्षा दें** जिसमें उसे चलना है, और वह बुढ़ापे में भी उससे नहीं हटेगा।

जो कुछ करो, **प्रेम से करो।** 1 कुरिन्थियों 16:14

विश्वासयोग्यता

हमेशा जो सही है वही करना, जो तुमसे करने को कहा जाए, जो आप से अपेक्षित हो, जो करना चाहिए चाहे आपसे वो करने को न कहा गया।

- ★ **इन विशेषताओं वाला व्यक्ति उन बातों को देखता है जो की जानी चाहिए और वह उनका ध्यान रखता है।**

यह असामान्य है परन्तु इसे हम चरित्र विशेषताओं में देखते हैं।

लूका 12:42 प्रभु ने कहा, "ऐसा विश्वासयोग्य और समझदार भण्डारी कौन है जिसे उसका स्वामी अपने सेवकों के ऊपर अधिकारी नियुक्त करे कि वह उन्हें ठीक समय पर भोजन सामग्री दे?"

विश्वासयोग्य**ता बहुत सा प्रतिफल** लाता है और **अवसर** के लिए द्वार खोल देता है। भरोसेमन्द व्यक्ति हर **छोटी से छोटी बात** का भी ध्यान रखेगा तथा बिना उपेक्षा किए या लापरवाही के सदा **वही काम करेगा जो सही है**।

लूका 16:10–13जो अत्यंत छोटी सी बात में विश्वासयोग्य है, वह बहुत में भी विश्वासयोग्य है। और जो अत्यंत छोटी बात में अधर्मी है, वह बहुत में भी अधर्मी है। (11) अतः यदि तुम अधर्म के धन में विश्वासयोग्य न रहे तो सच्चा धन तुम्हें कौन सौंपेगा?(12) यदि तुम पराए का धन उपयोग करने में विश्वासयोग्य न रहे तो जो तुम्हारा अपना है, उसे तुम्हें कौन देगा?

यह गुण **उन्नति, सफलता और समृद्धि** लाते है।

मत्ती 25:23 स्वामी ने उस से कहा, "शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य दास! तू थोड़े ही में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुम्हें बहुत सी वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा। अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।"

विश्वासयोग्यता आपको ऊंचे पद और उपयोगिता के लिए उन्नत करती और योग्य बनाती है।

1 कुरिन्थियों 4:17 इसी कारण मैंने तीमुथियुस को, जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है, तुम्हारे पास भेजा है। वह तुम्हें मसीह में मेरे आचरण का स्मरण कराएगा, जैसे कि मैं हर जगह, प्रत्येक कलीसिया को शिक्षा दिया करता हूं।

प्रेरित पौलुस ने उन्हें जिन पर वह भरोसा कर सकता था, इस्तेमाल किया और अवसर दिए।

इफिसियों 6:21 तुखिकुस, जो प्रिय भाई और प्रभु में विश्वासयोग्य सेवक है, तुम्हें मेरी परिस्थिति के विषय में बताएगा।

कुलुस्सियों 1:7 उसी की शिक्षा तुमने हमारे प्रिय सहकर्मी **इपफ्रास** से पाई, जो हमारे लिए मसीह का **विश्वासयोग्य** सेवक है।

कुलुस्सियों 4:9 **विश्वासयोग्य** और प्रिय भाई **उनेसिमुस**

1 तीमुथियुस 3:11 स्त्रियां भी सम्मानीय हों, द्वेषपूर्ण गप शप करने वाली न हों, परन्तु संयमी तथा **सब बातों में विश्वासयोग्य हों**।

2 तीमुथियुस 2:2 और जो बातें तूने बहुत से गवाहों के समक्ष मुझ से सुनी हैं, **उन्हें ऐसे विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौंप दे** जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।

इब्रानियों 3:5 परमेश्वर के सारे घराने में से **मूसा** तो **सेवक की भांति विश्वासयोग्य** रहा कि उन बातों का साक्षी हो जिनका वर्णन बाद में होने वाला था।

1 पतरस 5:12 **सिलवानुस** ... जिसे मैं **विश्वासयोग्य भाई** ...।''

प्रकाशितवाक्य 2:13 **अन्तिपास,** मेरा **विश्वस्त** साक्षी, तुम्हारे मध्य वहां मारा गया जहां शैतान का निवास है।

सच्चे चरित्र की विशेषताएं जीवन का मार्ग हैं, यह तब भी है जब वो आसान न हो।

प्रकाशितवाक्य 2:10 जो क्लेश तू सहने पर है उनसे न डर। ... तुम परखे जाओ, और तुम्हें ... क्लेश उठाना पड़ेगा। प्राण देने तक **विश्वासी रह** – तब मैं तुझे जीवन का मुकुट प्रदान करुंगा।

विश्वसनीय / भरोसेमन्द

जो मुझे कहा गया उसे पूरा करना चाहे इसके लिए असम्भावित बलिदान ही क्यों न देना पड़े।

भजन संहिता 15:4 वह शपथ खा कर बदलता नहीं, चाहे हानि ही उठानी पड़े।

निष्ठावान

अपनी वचनबद्धता को दृढ़ करने लिए विपरीत परिस्थितियों का इस्तेमाल करना, उनके लिए जिनकी सेवा करने के लिए परमेश्वर ने मुझे बुलाया है।

यूहन्ना 15:13 इससे महान प्रेम और किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्र के लिए अपना प्राण दे।

सेवा करना या सेवक बनना

यूहन्ना 13:14–15 यदि मैंने प्रभु और गुरु होते हुए तुम्हारे पैर धोए, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पैर धोने चाहिए। क्योंकि मैने तुम्हें नमूना दिया है कि तुम भी वैसा ही करो जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया।

★ यीशु मसीह, सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, हमारा उद्धारक, **एक सेवक था**।

इसलिए प्रिय बालकों के सदृश परमेश्वर का अनुकरण करने वाले बनो, (2) और प्रेम में चलो जैसे मसीह ने भी हम से प्रेम किया और सुखदायक सुगंधित भेंट बन कर हमारे लिए अपने आपको परमेश्वर के सम्मुख बलिदान कर दिया। इफिसियों 5:1–2

★ **सेवक** अपने नीचे कोई और पद या काम नहीं देखता। वह **उन चीज़ों को देखता और ढूंढता है जिन्हें उसे करना है और वह उनको करेगा**। वह ''पैरों को धोयेगा'', कूड़ा उठाएगा, बर्त्तन धोएगा या जो कुछ वह देखता है कि करने की ज़रुरत है तुरन्त करता है, बिना बोले।

मत्ती 20:25–28 परन्तु यीशु ने उन्हें अपने पास बुला कर कहा, ''तुम जानते हो कि गैर यहुदियों के अधिकारी उन पर प्रभुता करते, और उनके बड़े लोग उन पर अधिकार जताते हैं।(26) तुम में ऐसा न हो। जो कोई तुम में बड़ा बनना चाहे वे तुम्हारा सेवक बने,(27) और जो तुम में प्रधान होना चाहे वे तुम्हारा दास बने – (28) जिस प्रकार मनुष्य का पुत्र भी अपनी सेवा–टहल कराने नहीं वरन सेवा करने और बहुतों के छुटकारे के मुल्य में अपना प्राण देने आया।

दूसरों को उनके अपराधों के लिए **क्षमा करना**, वो साधन है जिसके द्वारा हम उन पर मसीह का प्रेम व्यक्त करते हैं। अपने बच्चों के आनन्दमय और शान्तिपूर्ण जीवन के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें क्षमा करने की शिक्षा दी जाए।

मत्ती 6:12 और जैसे हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर; (14) यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करोगे तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा।

लूका 23:34 (जब वे यीशु के हाथों में कीलें ठोक रहे थे) परन्तु यीशु ने कहा, ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।''

इफिसियों 4:32 एक दूसरों के प्रति दयालु और करुणामय बनो, और परमेश्वर ने मसीह में जैसे तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।

धैर्य, एक अन्दरुनी शक्ति है जिसके द्वारा हम कष्टों का सामना कर सकते हैं ताकि परमेश्वर तथा अन्य लोगों के लिए उत्तम कर सकें। अपने बच्चों को प्रोत्साहित और प्रशिक्षित करें कि वे जब तक काम समाप्त नहीं हो जाता **हार न मानें** और उसे **छोड़े नहीं**। लगातार उन्हें प्रोत्साहित करते रहें। उनका उत्साह बढ़ाने वाला बनें।

गलातियों 6:9 हम भलाई करने में निरुत्साहित न हों, यदि हम शिथिल न पड़ें तो उचित समय पर कटनी काटेंगे।

फिलिप्पियों 4:13 जो मुझे सामर्थ प्रदान करता है, उसके द्वारा मैं सब कुछ कर सकता हूं।

सुव्यवस्थित करना – अपने और अपने आस–पास की जगह को व्यवस्थित करना जिससे मैं और अधिक कार्यक्षमता को प्राप्त कर सकूं। अपने बच्चे को प्रशिक्षित करें कि सुबह जैसे ही वे उठें वैसे ही अपना बिस्तर ठीक करें, अपने कपड़े, खिलौने और अन्य चीज़ों को उठा कर अपने स्थान पर रखें। उनको सिखाएं कि जब भी कोई चीज़ कहीं से उठाते हैं तो काम खत्म करके उसे वापस अपने स्थान पर रख दें या फिर वह किसी वस्तु को अपनी जगह पर न देखें चाहे किसी और ने उसे वापस स्थान में नहीं रखी है और वे उसे देखें तो उसे सही स्थान पर रख दें।

1 कुरिन्थियों 14:40 फिर भी सब बातें उचित रीति से और क्रमानुसार की जाएं।

संयम – पवित्र आत्मा द्वारा आरम्भिक उकसाए जाने पर तत्कालिक आज्ञाकारिता। बच्चों के लिए पर्याप्त, सही अनुशासन पूर्णतः आवश्यक है जिससे बच्चे को यह जानने में सहायता हो कि वे संयम सीख सकते हैं, कर सकते हैं तथा इसका इस्तेमाल करेंगे।।

1 कुरिन्थियों 7:5 कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे **असंयम** के कारण शैतान तुम्हारी परिक्षा करे।

1 कुरिन्थियों 9:25 खेल प्रतियोगिता में भाग लेने वाला प्रत्येक खिलाड़ी सभी प्रकार का **संयम** रखता है। वह तो नष्ट होने वाले मुकुट की प्राप्ति के लिए यह सब कुछ करता है, परन्तु हम नष्ट न होने वाले मुकुट के लिए करते हैं।

गलातियों 5:22–25 परन्तु पवित्र आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, दयालुता, भलाई, विश्वस्तता, नम्रता और **संयम** है। ऐसे ऐसे कामों के विरुद्ध कोई व्यवस्था नहीं है। और जो मसीह यीशु के है, उन्होंने अपने शरीर को दुर्वासनाओं तथा लालसाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। यदि हम पवित्र आत्मा के द्वारा जीवित हैं तो पवित्र आत्मा के अनुसार चलें भी।

विनम्रता (घमण्ड का विपरीत)
यह पहचानना कि मेरे जीवन की उपब्धियों के लिए वास्तव में परमेश्वर और अन्य लोग जिम्मेवार हैं

याकूब 4:6 ''परमेश्वर घमण्डियों का विरोध करता, पर दीन लोगों पर अनुग्रह करता है।''

करुणा – दूसरो की चोट को चंगा करने के लिए जो कुछ भी आवश्यक है उसे निवेश करना।

1 यूहन्ना 3:17 परन्तु जिस किसी के पास इस संसार की सम्पत्ति है और वह अपने भाई को आवश्यकता में देख कर भी उसके प्रति अपना हृदय कठोर कर लेता है तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है?

लूका 10:30–37 अच्छा सामरी

हमारे 'गिरे हुए स्वाभाव' पर जय पाने के लिए तथा मसीह होने के नाते जो जीवन हो सकता है उसके सारे अनुभवों को पाने के लिए बच्चों को प्रशिक्षण देना पूर्ण रुप से आवश्यक है ।

तथा यह सेविकाई, यह कार्य, माता–पिता को दिया गया है
अगली पीढ़ी का भविष्य, माता–पिता के हाथों में है।

गलातियों 5:22–24 परन्तु पवित्र आत्मा का फल **प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, दयालुता, भलाई, विश्वस्तता,** (23) **नम्रता और संयम है**। ऐसे ऐसे कामों के विरुद्ध कोई व्यवस्था नहीं है। (24)और जो मसीह यीशु के है, उन्होंने अपने शरीर को दुर्वासनाओं तथा लालसाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।

2 पतरस 1:2–11 परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु के पूर्ण ज्ञान के द्वारा तुम में अनुग्रह और शान्ति बहुतायत से बढ़ती जाए।(3) उ**सकी ईश्वरीय सामर्थ ने** उसी के पूर्ण ज्ञान के द्वारा जिसने हमें अपनी महिमा और सदभावना के अनुसार बुलाया है, वह **सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें प्रदान किया है**।(4) क्योंकि उसने इन्हीं के कारण हमें अपनी बहुमुल्य और उत्तम प्रतिज्ञाएं दी हैं, जिससे कि तुम उनके द्वारा उस भ्रष्ट आचरण से जो वासना के कारण संसार में है, छूट कर **ईश्वरीय स्वाभाव के भागी हो जाओ**।(5) इसी कारण से **प्रयत्नशील हो कर** अपने विश्वास में **सदगुण** तथा सदगुण में **ज्ञान,** (6) और ज्ञान में **संयम,** संयम में **धीरज** और धीरज में **भक्ति**,(7) तथा अपनी भक्ति में **भ्रातृ स्नेह**, भ्रातृ स्नेह में **प्रेम** बढ़ाते जाओ।(8) क्योंकि यदि यह गुण तुम में बने रहें तथा बढ़ते जाएं तो हमारे प्रभु यीशु मसीह के पूर्ण ज्ञान में ये तुम्हें न तो अयोग्य और न निष्फल होने देंगे।(9) क्योंकि जिसमें ये गुण नहीं, वह अन्धा है, अदूरदर्शी है। वह अपने पहले के पापों से धुल कर शुद्ध होने को भूल बैठा है।(10) अतः हे भाईयों, अपने बुलाए जाने और चुने जाने की निश्चयता का **और भी अधिक प्रयत्न करते जाओ,** क्योंकि **इन बातों के प्रयत्न में जब तक रहोगे, तुम कभी ठोकर न खाओगे,** (11) और इसी प्रकार हमारे उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के **अनन्त राज्य में प्रवेश** के लिए तुम्हारा बड़ा स्वागत होगा।

स्मरण रखें :

जो एक पीढ़ी संयम के साथ ग्रहण करती है – इस बात की ठोस सम्भावना है कि अगली पीढ़ी उसको अगले चरण में ले जाएगी।

इस कारण, अचम्भा मत करना कि अच्छाई और बुराई के बीच फासला बढ़ रहा है। कलीसिया और अधिक धर्मी हो रही है (हम माता–पिता अपना काम कर रहे हैं) और यह संसार और भी अधिक अधर्मी हो रहा है।

क्या हम संसार के समान बन रहे हैं, या यह फासला बढ़ रहा है?

यह फासला और अधिक बढ़ना चाहिए क्योंकि :

जहां पाप बढ़ा, वहां **अनुग्रह में** और भी कहीं **अधिक वृद्धि** हुई। रोमियों 5:20

अतः उसके सहकर्मी होने के नाते, हम भी तुम से यह आग्रह करते हैं कि **परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ करने के लिए ग्रहण न करो**। 2 कुरिन्थियों 6:1

आपके बच्चों को प्रशिक्षित करने के लिए **परमेश्वर आपको अनुग्रह देता है** तथा अपने वचन से निर्देश देता है ताकि बच्चे ''धार्मिकता के मार्ग में '' चलें।

दूसरे शब्दों में, **वह आपकी सहायता करेगा** ताकि :

बच्चे को उसी **मार्ग** की **शिक्षा दें** जिसमें उसे चलना है (नीतिवचन 22:6)

और सहायता करेगा कि आप :

जो कुछ करो, **प्रेम से करो।** 1 कुरिन्थियों 16:14

इस कारण आप उसमें जो तुम्हें सामर्थ प्रदान करता है, सब कुछ कर सकते हैं। फिलिप्पियों 4:13

प्रार्थना – मांगना – ढूंढना – खटखटाना – उसके वचन का अध्ययन करना – आपके बच्चों का प्रशिक्षण

आभार :
जॉन ऐ स्टोरमर द्वारा लिखित Growing up God's Way ; Liberty Bell Press
बिल गोथार्ड द्वारा चरित्र रेखांकन